मेरी रूह नैन की पुतली

"मेरी रूह नैन की पुतली, तिन नैन पुतली के नैन ।
मासूक राखू तिन बीच में, तो पाँऊ अर्स सुख चैन ।।

प्यारे सुन्दर साथ जी जिस नज़र से खेल को देख रहे हैं उसी नज़र में परमधाम को भी देखना है क्योंकि नज़र जिसे कहा गया है वह परआतम की नज़र है इसीलिये परआतम को नैन भी कहा गया। यह नज़र आठों पहर धनी के इश्क में मगन थीं-अब माया के सुखों में अपना सुख मान कर बैठी है। इसी नज़र के रुख को मोड़ धनी की शोभा में लगाना है ज़ाहरी नजर से देखें तो इस नज़र की शक्ति का केन्द्र यह आँख है-और आँख मात्र एक इन्द्रिय होने के कारण मिट्टी है क्योंकि इस आँख की शक्ति का केन्द्र दिल से जुड़ा हुआ है - है तो दिल भी जीव का परन्तु असल तन के दिल से जुड़ा होने के कारण असल दिल ही कहलाता है।

दिल मोमन अर्स तन बीच में, उन दिल बीच ए दिल।
केहेने को ए दिल है, है अर्से दिल असल।।

दिल के भावों को प्रकट करने का माध्यम ये ज़ाहेरी आँखें हैं इसीलिए दिल और आँख का गहरा सम्बन्ध है और आँख के साथ यह नज़र जुड़ी है क्योंकि देखने का काम नज़र का है। परमधाम से दो ही वस्तुएं इस संसार में रूहों के नाम पर आई है। नज़र और दिल ! नज़र खेल देखने में व्यस्त है इस के रुख को मोड़ कर परमधाम की ओर लगाना है और जो दिल आया है परमधाम से, उसी के कारण मजाजी दिल जो जीव का है असल दिल कहलाता है। इस मजाजी दिल को हकीकी दिल बनाना है वह इस प्रकार से क्योकि राज जी के दिल की बातें ही परआतम के दिल में आती हैं और हमारा आत्म का तन वही काम करता है जो परआतम के दिल में होता है असल दिल से जीव के दिल का सम्बन्ध जुड़ने के कारण ही यह दिल ही अर्स दिल भी कहलाता है।

परआतम के अन्तस्करण में, जेती बीतत बात ।
तेते इन आतम के, करत अंग साख्यात ।।

अक्षरातीत के दिल में गंजानगंज इश्क का सागर है-इस इश्क के सागर की लीला परआतम के तनों द्वारा होती है यही कारण है कि परआतम को नैन कहा गया है। नैन का बातूनी अर्थ है वह नज़र जिसके द्वारा केवल इश्क की लीला सम्पादित हो और नैनों का घनिष्ठ सम्बन्ध है नज़र से । वह नैन जिससे इश्क की लीला आठो पहर होती थी अब खेल से जुड गयी है क्योंकि

Nijanand App

स्वयं राज जी ने ही खेल को अपने दिल में लेकर परआतम रूपी नैनों की नजर को खेल में मोड़ दिया हैं। ये नज़रें अब माया के रस ले रही हैं। यों भी देखा जाये तो इन नैनों से ही सारे भाव प्रकट होते हैं। इन्ही नैनों से प्रसन्नता प्रकट होती है इन्ही नैनों से दुख में रोंते भी है इन्ही नैनों से क्रोध की चिंनगारियां बरसती हैं तो यही नैन शीतलता की छाया भी देते हैं। इन्ही नैनों से प्रेम बरसता है तो इन्ही नैनों से घृणा भी प्रकट होती है। कहने का अर्थ यह है सुन्दर साथ जी कि दिल की गहराइयों में छिपे हुए भावों को प्रकट करने का माध्यम ये नैन हैं। उदाहरण के लिए वाणी में हम कितनी भी मिठास घोल कर मीठी मीठी बाते कर लें यदि दिल के भीतर घृणा के भाव हैं तो नैनो से अवश्य जाहिर होगें।

उपरोक्त चौपाई का पहला चरण है-मेरी रूह नैन की पुतली अर्थात मेरी आत्म परआतम रूपी नैनों की पुतली है। पुतली आँख के भीतर की सफेदी में जो काली वस्तु है उसे कहा गया है। परआतम रूपी नैनों से इश्क की लीला आठों पहर होती थी परन्तु अब परआतम की पुतली रूपी नज़र क्योंकि खेल का रस ले रही है, इसलिए परआतम के नैनों से इश्क की लीला होना असम्भव है। यों भी देखा जाये तो नैन भले ही कितने आकर्षक हों देखने में अति सुन्दर हों यदि उन नैनों से कुछ दिखाई ही न दे तो उन नैनों से क्या लाभ ?

अब परआतम रूपी नैन फरामोसी में हैं क्योंकि पुतली रूपी नज़र जिसे रूह कहा गया है वह खेल में मगन है। पुतली के भीतर एक छोटा गोला होता है जिसे तारा कहा जाता है। यही आँख का वास्तविक नूर है जिसके कारण आँखे कुछ भी देखने योग्य हो पाती हैं इस चौ० का पूरा चरण है मेरी रूह नैन की पुतली, तिन नैन पुतली के नैन अर्थात मेरी आत्मा परआतम रूपी नैनों की पुतली है और इस पुतली के नैन तारा हैं। जब खेल मे हम रूहों की नजर आई तो सर्वप्रथम इस दिल को लिया क्योंकि इस दिल में ही परआतम की बातें आती हैं जिसके कारण यह दिल असल दिल से जुड़ा हुआ है जिसे पुतली के नैन कहा गया है - है तो यह दिल जीव का दिल ही परन्तु इसी दिल में माशूक की शोभा को बसाना है। जब इस तारा रूपी दिल से माशूक अपने सिहांसन अर्स की सभी खुबियों सहित बिराजमान हो जायेगें। तो यही दिल जो जीव का है नैन बन जायेगें। कहने का अर्थ यह है कि जो शोभा परआतम के दिल मे बसी है वही शोभा यदि जीव के दिल में बस जायें तो इस जीव का दिल भी परआतम की भाँति नैन बन जायेगा। तब इन दिल रूपी नैनो से यहाँ खेल में बैठे बैठे परमधाम के २५ पक्षों तथा धनी का दीदार होगा। यह कहना यहाँ आवश्यक है कि इस खेल में अरस परस लीला नही हो सकती क्योंकि हकीकत का इश्क है यहाँ मारफत के इलम से हकीकत का इश्क आयेगा तो धनी का दीदार होगा इश्क से ही धनी का मिलन होगा परन्तु जितना इश्क यहाँ धनी हमें देंगे उसी से संतोष करना पड़ेगा।

'मारफत देवे इश्क, इश्के होय दीदार।
इश्के मिलिए हक सों, इश्के खुले पट द्वार ।। (प्रक-२५/६८ सिनगार)

Nijanand App

जब इस दिल पर से माया का परदा हट जाता है तब तो यही दिल अपने नैनों से धनी का दीदार करता हैं। यही नही इस दिल की जुबाँ भी होती है जिसके कारण माशूक से बातें होती हैं इस दिल के कान भी होते हैं जिनके द्वारा धनी की बातें सुनाई देती हैं। कहने का अर्थ यह है सुन्दरसाथ जी कि दिल की गहराईयों में जो छिपा होता है वही तो ये आँखे देखती हैं कानों को भी वही सुनाई देता है और जुबां पर भी वही होता है।

रूह नैनो दीदार कर, रूह जुबाँ हक से बोल।
रूह कानों हक से बाते सुन, एह पट रूह का खोल ।।

आँख का तारा कहने का अर्थ है जो हमें बहुत प्यारा हो वही आँख का तारा का अधिकारी है। इसके अतिरिक्त आंख का तारा आँख की गहराई में छिपा हुआ इतना कोमल और नाजुक है कि इसे हाथ की अंगुली से भी स्पर्श करने पर पीड़ा होने लगती है यहाँ तक कि धूल के कण भी आँख के भीतर प्रवेश नही कर पाते। आँखो की पलकें फौरन इन आखों को ढक कर इन्हें किसी भी प्रकार के खतरे से सुरक्षित रखती है तो सुन्दरसाथ जी अपने माशूक को आँख की पुतली के भीतर तारे में इस कदर छिपा कर रखना हैं कि उसे आशिक के अतिरिक्त कोई और न देख सके और इतना आराम मिले कि वह यहाँ से निकल कर और कहीं भी न जा सके।

<u>तो पाँऊ अर्स सुख चैन :-</u> इसी चौ० का यह चौथा चरण है - जिस प्रकार शरीर से प्राण निकलने पर यह शरीर मुर्दा हो जाता है ठीक इसी प्रकार माशूक की शोभा को देख लेने के पश्चात् कुछ भी और देखना शेष नही रहता इन आँखों से इश्क की ऐसी मदहोशी छा जाती है कि पलकें स्वयं ही मुँद जाती हैं क्योंकि आशिक माशूक के अतिरिक्त कुछ और देखना नही चाहता। इसीलिए कहा गया है जिन नैनन में प्रीतम बसे तिन नैनन छवि और न समाये, और यदि शोभा हमारे दिल में न बसी हो तो समझना चाहिए कि हमारी सारी बातें कहनी ही कहनी की है। यदि एक बार तारा रूपी दिल में शोभा धनी के हुकुम से बस जायें तो वहाँ से कभी नही निकल पाती परन्तु दिल में उतनी गहराई तक शोभा का उतरना असंभव तो नहीं कठिन अवश्य है। यही कारण है कि इन्द्रावती की आत्मा ने सिन्धी वाणी के द्वारा कहा कि हे धनी आप का इलम दिल तक पोहोंचता तो है पर रूह तक नही पहुँचता।

बेसक डिने इलम, जगाया दिल के ।
इलम न पुन्जें रूह सी, सभ हाथ हुकुम जे।। (प्र ७/२६ सिन्धी वाणी)

तो प्यारे सुन्दर सुन्दरसाथ जी - जब पुतली के नैन अर्थात आँख के तारे के भीतर माशूक अपने सिहांसन तथा सभी खूबियो सहित बिराजमान हो जाते है तब कहीं भी रहें,

Nijanand App

परिस्थितियाँ कैसी भी हों कुछ भी अन्तर नही पड़ता क्योंकि माशूक की शोभा के सामने सभी स्वाद फीके लगने लगते हैं। आत्मा की इसी Stage के लिए यह चौ० कही गयी है "घर में ही न्यारे रहिए, कीजे अन्तर में वास" अर्थात जब संसार की किसी वस्तु का आकर्षण न रहे यहाँ तक कि शरीर को भी सुध न रहे तब हम कही भी रहे कुछ भी अन्तर नही पड़ने वाला है। ऐसी अवस्था में परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन हों रूह के जीवन में आँच नही आ पाती। जिस प्रकार राजा जनक वेदैही कहलाये क्योंकि शरीर का मोह ही नही रहा इन परिस्थितियों में वह सोने के सिहासन पर बैठें या काटों की सेज्या पर जब इन्हे किसी प्रकार का अन्तर नहीं तभी तो कह पायेगें कि शरीर रूपी घर में रहते हुए भी इस में नही रहते ।।

उठते बैठते सोते, सुपन सोवत जागृत।
दम न छोड़ें माशूक को, जाकी असल हक निसबत।।"

प्रणाम जी

कान्ता भगत - पीतमपुरा, दिल्ली

संवेदना

जयपुर निवासी धामवासी श्री देसराज जी धूडिया की धर्मपत्नी श्रीमती संतोष धूड़िया का दिनांक २२-४-०२ को धामगमन हो गया। इस समाचार से समस्त सुन्दरसाथ आहत हो उठे। अपने ६८ वर्ष के जीवन काल में श्रीमती धूड़िया धर्म व समाज के प्रति सर्मपित रहीं। **धाम दर्शन** परिवार आपके पुत्र-पुत्रवधू सर्वश्री रवि-पूनम, मनोज-नीरू और पुत्री-दामाद श्रीमती सुदेश-हरिकिशन, मीना-सोहन लाल एवं ऊषा-राकेश के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है और श्री जी से अर्जी करता हूँ कि वह निज आतम को अपने चरणों में स्थान दें।

आभार

श्री देसराज जी धूड़िया परिवार, जयपुर की तरफ से रू २५०/- साहित्य सेवा धाम दर्शन हेतु प्राप्त हुए है। धाम दर्शन परिवार आपके प्रति आभार व्यक्त करता है।

Nijanand App